



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 26]

नई दिल्ली, शुक्रवार, फरवरी 3, 2006/माघ 14, 1927

No. 26]

NEW DELHI, FRIDAY, FEBRUARY 3, 2006/MAGHA 14, 1927

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 फरवरी, 2006

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय: चीन जन. गण. मूल के अथवा वहां से निर्यातित सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच

1. सं. 14/7/2005-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे इसके बाद पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

2. जबकि मै0 केसोराम रेयन, मै0 केसोराम इंडस्ट्रीज, कोलकाता के यूनिट (जिसके इसके बाद आवेदक कहा गया है) ने निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन-पत्र सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार दर्ज कराया है जिसमें चीन जन. गण. (जिसे इसके बाद 'संबद्ध देश' अथवा चीन जन. गण. कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म (जिसे इसके बाद संबद्ध माल कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और प्राधिकारी से अनुरोध किया गया है कि संबद्ध माल पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के संबंध में पाटनरोधी जांच प्रारंभ की जाए।

3. और जबकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 27 सितंबर, 2005 की एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसके अनुसार उक्त नियमावली के नियम 6 के अनुसार संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के

आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ की गई जिससे तथाकथित पाटन होने, उसकी मात्रा तथा प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और इस बात की सिफारिश की जा सके कि क्या पाटनरोधी शुल्क की राशि यदि लगाई जाए तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

क. प्रक्रिया

- 4 प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त जांच-प्रारंभ के बारे में अधिसूचित करते हुए सार्वजनिक सूचना जारी किए जाने के बाद इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है:
 - i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों पर भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों और आयातकों, प्रयोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग को दिनांक 27 सितंबर, 2005 की जांच-प्रारंभ अधिसूचना की प्रतिलिपियां भेजीं और उनसे अनुरोध किया कि वे जांच-प्रारंभ संबंधी अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रश्नावली का प्रत्युत्तर भेज दें और अपने-अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करें।
 - ii) घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका के अगोपनीय अंश की प्रतियां नियम 6 के अनुसार चीन जन.गण. के ज्ञात निर्यातकों और दूतावास को उपलब्ध करायी गयी।
 - iii) चीन जन.गण के भारत स्थित दूतावास को नियम 6 के अनुसार जांच-प्रारंभ के बारे में सूचित किया गया और अनुरोध किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें कि वे निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दे दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र तथा प्रश्नावली की एक-एक प्रति निर्यातकों के नाम तथा पतों के साथ-साथ उन्हें भेजी गई।
 - iv) बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार दिए जाने संबंधी एक प्रश्नावली चीन जन.गण. के सभी ज्ञात निर्यातकों तथा दूतावास को अग्रेषित की गई। जांच प्रारंभ किए जाने के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का आधार यथोचित सामान्य मूल्य आकलन के रूप में भारत को यूनाइटेड किंगडम (यूके) से हुए निर्यातों की कीमत बनाई गई। भारत को किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत के विकल्प के रूप में आवेदक ने उपरोक्त नियमावली के अनुबंध I के पैरा 7 के अनुसार भारत में देय

कीमत के रूप में चीन के सामान्य मूल्य का भी आकलन प्रदान किया। जांच प्रारंभ के पश्चात प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों को सूचित किया कि प्राधिकारी का प्रस्ताव है कि यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के पैरा (7) तथा (8) के मद्देनजर चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माने जाने के संबंध में आवेदक के दावे की जांच की जाए। अतः चीन जन.गण. के संबद्ध माल के संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों से अनुरोध किया गया कि वे अनुबंध I के पैरा (8) में यथाउल्लिखित आवश्यक जानकारी/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत कर दें ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सके कि क्या उन सहयोगकारी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किया जा सके जो यह प्रदर्शित करें कि वे उपरोक्त पैराग्राफ में निर्धारित मानदंडों को पूरा करते हैं।

v) प्राधिकारी ने संगत जानकारी मंगाने हेतु चीन जन.गण के ज्ञात निर्यातकों को नियम 6(4) के अनुसार, प्रश्नावली भेजी:-

1. शांगयू सेलोफेन कं0 लि0
दासांजियाओ डेवलपमेंट जोन,
शांगयू सिटी, झिजियांग प्रोविंस,
चीन जिप-312300
2. युआओ पेपर मिल
नं0 328 जियांग-युआन स्ट्रीट,
युआओ सिटी, झिजियांग,
चीन-जिप-315400
3. वेइफांग हेंगलियान सेलोफेन कं0 लि0
409, वालोंग ईस्ट स्ट्रीट,
वेइफांग, शांगडोंग,
चीन-जिप-261031

vi) उपरोक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर नहीं दिया।

vii) भारत में संबद्ध माल के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों तथा प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई जिसमें नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक जानकारी मंगाई गई:-

- मै० हिंदुस्तान लीवर लि०
- मै० महावीर स्पिनिंग मिल्स लि०
- मै० आर पी जे पैकेजिंग प्रा० लि०
- मै० फोनिक्स युले लिमिटेड
- मै० इंडियन केमिकल कंपनी
- मै० सी पटेल एंड कंपनी
- मै० हरबंसलाल मल्होत्रा एंड संस लि०
- मै० जैबे ट्रेडिंग कं०
- मै० दि पेपर प्रोडक्ट्स लि०
- मै० जी डी फार्मास्यूटिकल्स लि०
- मै० च्वाइस लेबोरेट्रीज
- मै० कल्याण कन्फेक्शनरी प्रा० लि०
- मै० रिलायंस इंडस्ट्रीज लि०
- मै० कमल ब्रा०
- मै० क्वालिटी रोटोप्रिंट्स
- मै० सेठ केमिकल वर्क्स प्रा० लि०
- मै० टी पैकर्स (इंडिया) प्रा० लि० मै० ईजैडवाई पैक
- मै० थ्रैड्स (इंडिया) लि०
- मै० मैसूर सेंट्स कंपनी
- मै० फिल्स लेमिनेशंस
- मै० दागा प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग इंडस्ट्रीज
- मै० ज्योति कोटर्स प्रा० लि०
- मै० ट्रेड इंटरनेशनल

viii) उपरोक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में मै० मुकेश पेपर मार्ट और मै० गुलशन राय जैन एंड संस ने अपने-अपने प्रत्युत्तर प्रस्तुत किए हैं

- ix) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) से अनुरोध किया गया कि वे जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के लिए संबद्ध माल के आयातों के ब्यौरें उपलब्ध कराएं ।
- x) प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया और उसे इच्छुक पक्षकारों को निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- xi) सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में संबद्ध माल की अनुकूल उत्पादन-लागत, और विनिर्माण एवं बिक्री-लागत की गणना की गई जिससे यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने हेतु पर्याप्त रहेगा । इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग को निर्देश दिया गया कि वे विचाराधीन उत्पाद के संबंध में अपनी उत्पादन लागत तथा आय विवरण-पत्र प्रस्तुत करें जो किसी कार्यरत लागत लेखाकार द्वारा विधिवत प्रमाणित हो, जिसका निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापन भी किया गया ।
- xii) इस अधिसूचना में **** पर व्यक्त जानकारी याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी को व्यक्त करती है और प्राधिकारी द्वारा उक्त नियमावली के तहत उसी पर विचार किया गया है ।
- xiii) जांच दिनांक 1 अप्रैल, 2004 से प्रारंभ 31 मार्च, 2005 तक की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में रुझानों की जांच अप्रैल, 2001-मार्च, 2002, अप्रैल, 2002-मार्च, 2003, अप्रैल, 2003-मार्च, 2004 और जांच अवधि के लिए की गई ।

ख. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

- 5. विचाराधीन उत्पाद सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म है जिसे ट्रांसपेरेंट पेपर अथवा टीपी फिल्म के नाम से भी जाना जाता है जो चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित हो । ट्रांसपेरेंट फिल्म ग्लास क्लियर ट्रांसपेरेंसी और स्पार्कल की रिजनरेटिड सेलुलोज फिल्म होती है । यह लोचशील होती है लेकिन सख्त होती है

और किसी ऑटोमेटिक पैकेजिंग प्रचालन में यह सभी चोटों को सह सकती है और यह आउटस्टैंडिंग मशीन सामर्थ्य और डाइमेंशनल स्थायित्व दर्शाती है। इसे लकड़ी की लुग्दी से बनाया जाता है, अतः यह नॉन-टाक्सिक तथा बायोडिग्रेडेबल होती है।

6. टीपी फिल्मों को रंगीन अथवा सफेद बनाया जा सकता है। ट्रांसपेरेंट फिल्म शीट तथा रोल रूपों में उपलब्ध होती है। इस समय अनेक ग्रेडों वाली टीपी फिल्मों की विभिन्न किस्मों का उत्पादन किया जाता है। सभी ग्रेड विचाराधीन उत्पाद के दायरे में हैं। यह एक आदर्श पैकेजिंग सामग्री होती है।
7. टीपी फिल्में प्लास्टिक श्रेणी तथा उसकी वस्तुओं के रूप में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 39, उपशीर्ष 392071 के तहत वर्गीकृत है। किंतु, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और उनकी जांच के दायरे पर कोई बाध्यता नहीं है।

आयातकों के विचार

8. एकमात्र प्रत्युत्तरदाता आयातक ने दावा किया कि आयातित उत्पाद घटिया क्वालिटी का होता है और यह न तो घरेलू उद्योग के समान उत्पाद है और न ही उससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। आयातक ने दावा किया है कि आयातित उत्पाद अनेक कारकों के आधार पर समान उत्पाद नहीं हैं जिनमें शामिल हैं वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता की मात्रा, व्यापारिक कार्य तथा अंतिम प्रयोग, कीमत निर्धारण, मात्रा, वितरण के चैनल, उत्पादों के ग्राहक तथा उत्पादक अवबोधन, वाणिज्यिक छवि, उत्पादों की मशीनी योग्यता।
9. इन आयातकों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि टीपी के तीन ग्रेडों का विनिर्माण किया जाता है और केवल ग्रेड III का ही आयात किया जाता है जिसकी अन्य बढ़िया ग्रेडों से तुलना नहीं की जा सकती है। इसके अलावा, ग्रेड III का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा कम मात्रा में किया जाता है।

घरेलू उद्योग के विचार

10. आवेदक ने दावा किया है कि घरेलू उत्पादकों द्वारा उत्पादित सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म और संबद्ध देशों से आयातित उत्पादों के बीच कोई ज्यादा अंतर नहीं है।

उनकी तुलना इन विशेषताओं के रूप में की जा सकती है जैसे कि वास्तविक एवं रासायनिक विशेषताएं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य तथा प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा माल का टैरिफ वर्गीकरण। आवेदक का दावा है कि ये दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक दृष्टियों से प्रतिस्थापनीय होती हैं। उपभोक्ता इन दोनों का प्रयोग परस्पर रूप से कर रहे हैं।

11. आवेदक एक ही सामान्य उपभोक्ता श्रेणी के लिए इन व्यापारियों/पुनर्विक्रेताओं से प्रत्यक्ष रूप से अथवा अपने डीलरों की मार्फत प्रतिस्पर्धा करता है। आवेदक कंपनियों द्वारा बिक्री की काफी मात्रा पुनर्विक्रेताओं की मार्फत बेची जाती है। सभी पुनर्विक्रेता चाहे वो घरेलू उत्पाद अथवा आयातित उत्पाद का व्यापार कर रहे हों, इस उत्पाद की सप्लाई एक ही सामान्य उपभोक्ता श्रेणी को कर रहे हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

12. पाटनरोधी नियमावली का नियम 2(घ) समान उत्पाद को निम्नानुसार परिभाषित करता है:-

"एक ऐसा उत्पाद जो भारत में पाटित हो रहे जांच में शामिल वस्तु के हर प्रकार से समरूप अथवा समान हो अथवा ऐसे वस्तु के अभाव में एक और वस्तु जो हालांकि हर तरह से समान नहीं हो लेकिन उसकी विशेषताएं जांच के तहत वस्तुओं से बिल्कुल मिलती जुलती हों।"

13. जिस उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने बाबत आवेदन-पत्र दर्ज कराया गया वह "सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म जिसे ट्रांसपेरेंट पेपर भी कहा जाता है" है। तदनुसार, पाटनरोधी शुल्क आरंभ की गई जिसमें विचाराधीन उत्पाद को परिभाषित किया गया है। इस आवेदक ने दावा किया कि उनके द्वारा उत्पादित माल और चीन जन.गण. मूल के अथवा वहां से निर्यातित माल समान वस्तु हैं। आयातक ने अपने निवेदनों में इस बात का दावा किया है कि उनके द्वारा आयातित माल घटिया क्वालिटी का है। किंतु, क्वालिटी में अंतर होने से यह उत्पाद सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म से भिन्न नहीं है। यह उत्पाद अब भी सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म है जिसे ट्रांसपेरेंट पेपर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इस उत्पाद में वही मौलिक वास्तविक एवं रासायनिक विशेषताएं हैं और इसके कार्य तथा प्रयोग वही हैं। यदि मामला ऐसा है तो यह नहीं कहा जा सकता है कि मात्र

क्वालिटी में अंतर होने से आयातक द्वारा आयातित उत्पाद 'सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म, जिसे ट्रांसपेरेंट पेपर के नाम से भी जाना जाता है', विचाराधीन उत्पाद से भिन्न है।

14. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित माल विचाराधीन उत्पादित आयात के समान उत्पाद है। क्वालिटी में तथाकथित अंतर के फलस्वरूप उसकी कीमतों में भी अंतर हो सकता है। किंतु, क्वालिटी में अंतर होने के परिणामस्वरूप वास्तविक विशेषताओं में संभाव्य अंतर के लिए कीमत समायोजन अपेक्षित होता है। जैसाकि घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए साहसी सिद्धांतों के संबंध में अनुबंध I के पैरा 6(i) में वास्तव में वास्तविक विशेषताओं में अंतर के कारण संभाव्य कीमत समायोजन का प्रावधान किया गया है। किंतु, आयातक ने मात्रा संबंधी साक्ष्य से ऐसे किसी कीमत अंतर का दावा नहीं किया है। इसके अलावा, ऐसे समायोजन का दावा सामान्य रूप से केवल चीन के किसी उत्पादक द्वारा किया जा सकता है। चूंकि चीन के किसी भी उत्पादक ने प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं भेजा है अतः ऐसा कीमत समायोजन व्यावहारिक नहीं है।
15. उपरोक्त दावे की जांच किए जाने के बाद यह अनंतिम तौर पर निष्कर्ष दिया जाता है कि चीन से आयातित उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद में कोई अंतर नहीं है, केवल क्वालिटी में तथाकथित अंतर को छोड़कर। हालांकि यदि यह मान लिया जाता है कि आयातित उत्पाद घटिया क्वालिटी का है लेकिन क्वालिटी में इस अंतर से आयातित तथा घरेलू उत्पाद नियम 2(घ) के आशय के भीतर कोई भिन्न उत्पाद नहीं हो सकता है। यह उल्लेख करना भी संगत है कि क्वालिटी में अंतर होना किसी भी उत्पादक का सचेत व्यावसायिक निर्णय नहीं होता है। इस उत्पाद का वर्गीकरण उसके विनिर्माण के बाद प्राप्त उत्पाद में अवबोधयुक्त क्वालिटी अंतर पर आधारित विभिन्न ग्रेडों में किया गया है। अतः, विभिन्न ग्रेडों के प्रति यूनिट उत्पादन लागत एक समान है।
16. उपरोक्त के मद्देनजर प्रारंभिक जांच-परिणामों के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी का निर्णय है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित माल उपरोक्त नियमावली के आशय के भीतर चीन से आयातित माल के समान उत्पाद है।

ग. घरेलू उद्योग

17. नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

(ख) 'घरेलू उद्योग का आशय समान उत्पाद के विनिर्माण और उससे संबंधित किसी भी कार्यकलाप में कार्यरत सभी घरेलू उत्पादकों से है अथवा ऐसे लोगों से है जिनका सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा होता है लेकिन इसमें वह स्थिति शामिल नहीं है जहां ऐसे उत्पादक तथाकथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबद्ध नहीं हों अथवा वे उसके स्वयं आयातक हों जबकि ऐसे उत्पादक घरेलू उद्योग का कोई भी हिस्सा नहीं माने जाते हों ।'

पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का आवेदन मै0 केसोराम रेयन, केसोराम इंडस्ट्रीज के यूनिट द्वारा दर्ज कराया गया । इस आवेदक ने भारत में इस उत्पाद के एकमात्र उत्पादक के रूप में स्वयं का दावा किया है । प्रत्युत्तरदाता आयातक ने इस तथ्य का भी खंडन नहीं किया है कि आवेदक भारत में इस उत्पाद का एकमात्र उत्पादक है। जांच से यह भी विदित नहीं हुआ है कि देश में कोई और भी उत्पादक मौजूद है । इसके मद्देनजर प्राधिकारी का निर्णय है कि आवेदक पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग है ।

घ. सामान्य मूल्य

आवेदक के दावे

18. आवेदक ने दावा किया कि चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है । किसी भी देश ने चीन को विस्तृत मूल्यांकन प्रक्रिया, जांच तथा मूल्यांकन अपनाने के बाद बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया है । हालांकि चीन एक्सेशन संधि में इस बात से सहमत हुआ था कि डब्ल्यूटीओ सदस्य दिसंबर 11, 2016 द्वारा एनएमई पाटनरोधी पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं । चीन को विगत वर्षों में यूरोपीय आयोग तथा अमरीका द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है । यूरोपीय संघ तथा अमरीका विश्व व्यापार संगठन के देश हैं । भारत में भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक

31 मई, 2002 के संशोधन के बाद उसके विरुद्ध की गई व्यावहारिक दृष्टि से सभी जांचों में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है। दिनांक 4 जनवरी, 2002 के संशोधन के बाद भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का देश माना है। अन्य डब्ल्यूटीओ सदस्य देशों द्वारा चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिए जाने के संबंध में यूरोपीय आयोग तथा अमरीका ने चीन को अनेक जांचों में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का देश माना है।

19. इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि एकमात्र प्रत्युत्तरदाता आयातक ने दावा किया कि चीन को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया जाना चाहिए जैसाकि प्राधिकारी द्वारा कुछ अन्य जांचों में किया गया है। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करता है कि नियमावली में प्रावधान है कि चीन का निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा का दावा सत्यापनीय सकारात्मक साक्ष्य के आधार पर कर सकता है। वास्तव में प्राधिकारी ने चीन की कंपनियों को विगत में ऐसा दर्जा दिया है। इस दर्जे का दावा चीन के संबंधित उत्पादकों द्वारा किया जाना अपेक्षित है। किंतु, चीन के किसी भी उत्पादक ने ऐसा दावा नहीं किया है और इसीलिए प्राधिकारी उक्त नियमावली के अनुबंध I के पैरा 8 को लागू नहीं कर सकता है।

आयातकों के दावे

20. प्रत्युत्तरदाता निर्यातकों ने दावा किया कि चीन को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार दिया जाए। उन्होंने आगे यह भी दावा किया कि यूके इन तथ्यों के मद्देनजर कोई यथोचित बाजार अर्थव्यवस्था वाला तीसरा देश नहीं है कि (क) यूके से आयात कोटेड फिल्में अथवा टेपबेस फिल्में होती हैं जो चीन की सीटीएफ के समान नहीं होती है, (ख) यूके में कीमतें अपेक्षतया अधिक हैं, (ग) यूके की कीमतें याचिका में दिए गए आंकड़ों के अनुसार काफी भिन्न हैं, (घ) इंडोनेशिया, थाइलैंड, मलेशिया अपेक्षतया अधिक प्रतिनिधि देश है क्योंकि इन देशों में उत्पादन लागत कम होती है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

21. गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से होने वाले आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांचों में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के पैराग्राफ 7 तथा 8 के अनुसार किया जाना होता है।

22. प्राधिकारी नोट करता है कि चीन की किसी भी प्रक्रिया से निर्धारित रूप तथा तरीके में प्रत्युत्तर नहीं आया है। चीन के किसी भी उत्पादक ने यह दावा नहीं किया है कि उन्हें बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया जाए। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी इस स्थिति में नहीं है कि उपरोक्त नियमावली के अनुबंध I के पैरा 8 को लागू किया जाए और इसीलिए वह इस नियमावली के अनुबंध I के पैरा 7 के अनुसार कार्रवाई आगे बढ़ाता है। इस नियमावली के अनुसार चीन के सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित में से किसी एक आधार पर किया जा सकता है:-

- (क) किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत,
- (ख) किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में परिकलित मूल्य,
- (ग) भारत सहित अन्य देशों के लिए किसी ऐसे तीसरे देश की कीमत,
- (घ) भारत में वास्तव में दी गई कीमत जिसमें यथोचित लाभ मार्जिन समायोजित एवं शामिल हो,
- (ङ) भारत में वास्तव में देय कीमत जिसमें यथोचित लाभ मार्जिन शामिल किए जाने हेतु उसका समायोजन किया गया हो।

23. आवेदक का प्रस्ताव था कि भारत के लिए यूके की आयात कीमत पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ किसी यथोचित बेंचमार्क पर विचार किया जाए। आवेदक ने भारत में उत्पादन लागत के आकलन से यूके की आयात कीमत पर आधारित सामान्य मूल्य के अपने दावे के समर्थन में तथ्य दिए हैं जिसमें बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक खर्चे तथा यथोचित लाभ शामिल किए जाने हेतु विधिवत् समायोजन किया गया। एकमात्र प्रत्युत्तरदाता आयातक ने अनेक आधारों पर यथोचित बेंचमार्क के रूप में यूके की कीमतों पर विचार किए जाने पर ऐतराज किया है।

24. प्राधिकारी नोट करता है कि आवेदक ने बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश अर्थात् यूके की कीमत का एक साक्ष्य प्रदान किया है। प्रत्युत्तरदाता आयातकों ने इस दावे का खंडन किया है और निवेदन किया है कि यूके कोई यथोचित बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है इसीलिए उन्होंने कुछ अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का सुझाव करते हुए कोई सत्यापन या साक्ष्य प्रदान नहीं किया है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में देय कीमत पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण किया है जिसमें एक यथोचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए विधिवत् समायोजन किया है और यह अगली जांच होने तक उक्त नियमावली के अनुबंध I के उपबंधों के अनुसार किया

गया है। इस प्रकार, सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण *** रु0/कि.ग्रा. पर किया जाता है।

ड. निर्यात कीमत

25. जांच प्रारंभ करने हेतु प्रस्तुत निवेदन ने आवेदक ने डीजीसीआईएंडएस तथा आईबीआईएस द्वारा प्रस्तुत सौदेवार आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत की गणना की। आवेदक ने दावा किया था कि डीजीसीआईएंडएस द्वारा दिए गए सौदेवार आंकड़ों में भारत में बताए गए सभी आयात शामिल नहीं हैं क्योंकि ये आयात अनेक सीमाशुल्क वर्गीकरणों के तहत बताए गए हैं। आवेदक ने दावा किया कि ये आयात अलग-अलग सीमाशुल्क वर्गीकरण सं0 39207111, 39207119, 39207129, 39209929 और 48064090 के तहत हुए बताए गए हैं। आवेदक ने आगे यह भी दावा किया कि वास्तव में अन्य देशों से हुए आयात कुछ अन्य वर्गीकरण के तहत भी हुए बताए गए हैं।
26. एकमात्र प्रत्युत्तरदाता आयातक द्वारा आवेदक के दावे से कोई इंकार नहीं किया गया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध आयातक द्वारा प्रस्तुत जानकारी से परिलक्षित होता है कि ये उत्पाद ऊपर यथाउल्लिखित विभिन्न सीमाशुल्क वर्गीकरणों के तहत हुए बताए गए हैं। उपरोक्त मद्देनजर निर्यात कीमत का निर्धारण सीमाशुल्क वर्गीकरण सं0 392071 और अन्य सीमाशुल्क उपशीर्षों में बताए गए आयातों को शामिल करने के बाद सौदे-वार आयात आंकड़ों के आधार पर किया गया है। औसत आयात कीमत 26.43 रु0/कि.ग्रा. (0.58 अम.डा./कि.ग्रा.) आती है। अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री बीमे, कमीशन, समुद्री भाड़े, बैंक प्रभारों तथा पत्तन खर्चों के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए कीमत समायोजनों पर विचार किए जाने के बाद कारखानागत निर्यात कीमत *** रु0/कि.ग्रा. (*** अम.डा./कि.ग्रा.) आती है।

च. पाटन मार्जिन

27. प्राधिकारी नोट करता है कि सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच तुलना एक उचित तुलना होनी चाहिए। अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण कारखानागत स्तर पर किया है। सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत दोनों ही एक ही अवधि के लिए हैं। इस प्रकार, प्राधिकारी इस बात पर विचार करता है कि की गई तुलना एक उचित तुलना है। ऊपर यथा विस्तार से निर्धारित

सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत को देखते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो *** रु०/कि.ग्रा. (*** अम.डा./कि.ग्रा.) बैठती है जोकि निवल निर्यात कीमत के 369% आती है ।

छ. घरेलू उद्योग को हुई क्षति

आयात मात्रा और बाजार हिस्सा

28. विभिन्न देशों से पाटित आयातों की मात्रा और आयातों में उनका हिस्सा तथा भारत में उत्पादन तथा खपत के आंकड़े नीचे दी गई तालिका में दर्शाए गए हैं-

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|---------------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| आयात मात्रा (मी.टन) | | | | |
| चीन से | 88 | 171 | 237 | 508 |
| कुल आयात | 229 | 500 | 448 | 692 |
| आयातों में चीन का हिस्सा % | 38.7 | 34.17 | 52.96 | 73.37 |
| मांग/खपत (मी.टन) | 2011 | 2333 | 2159 | 2633 |
| भारतीय मांग में चीन का हिस्सा % | 4.40 | 7.32 | 10.99 | 19.28 |
| उत्पादन के संबंध में आयात % | 4.55 | 7.92 | 11.86 | 20.67 |

- क) यह पाया जाता है कि चीन जन.गण. से हुए आयातों में इस अवधि के दौरान समग्र दृष्टि से और भारत में आयातों, भारत में उत्पादन और भारत में खपत के संबंध में वृद्धि हुई है ।
- ख) चीन जन.गण. से आयातों में भारत में विचाराधीन उत्पाद के कुल आयातों के संबंध में वृद्धि हुई है जो 39% की तुलना में क्षति अवधि के दौरान 73% हो गए ।
- ग) चीन जन.गण. से हुए आयातों में भारत में उत्पादन के संदर्भ में वृद्धि हुई है जो 4.55% (2001-02) से बढ़कर 20.67% (2004-05) हो गया ।
- घ) चीन जन.गण. से हुए आयातों में मांग के संदर्भ में भी वृद्धि हुई है जो 4.40% से बढ़कर उक्त अवधि में 19.28% हो गए ।

उपरोक्त से यह विदित है कि आयातों में वृद्धि हुई है और यह वृद्धि बहुत है ।

आयातों का कीमत प्रभाव

29. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण बिक्री कीमत, कर तथा शुल्क बिना, छूट, डिस्काउंट तथा कमीशन और भाड़ा तथा परिवहन पर विचार किए जाने के बाद किया गया है । आयातों की लैंडेड कीमत का निर्धारण भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत तथा उसमें 1% लैंडिंग प्रभार और देय आधारिक सीमाशुल्क पर विचार किए जाने के बाद किया गया है । विभिन्न कीमतों का रुझान नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है:

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|---|---------|---------|---------|-----------|
| सीआईएफ निर्यात कीमत (रु०/कि.गा.) | 64.51 | 94.76 | 30.36 | 26.43 |
| पिछले वर्ष | | (46.89) | 67.96 | 12.94 |
| आयातों की लैंडेड कीमत (रु०/कि.ग्रा.) | 84.06 | 123.47 | 38.02 | 31.77 |
| पिछले वर्ष | | (46.89) | 67.96 | 12.94 |
| निवल बिक्री (सूचीकृत) | 100 | 98 | 81 | 83 |
| न्यूनतम मूल्य (सूचीकृत) | 100 | 15 | 142 | 158 |
| लागत उत्पादन (सूचीकृत) | 100 | 95 | 97 | 96 |

30. यह नोट किया जाता है कि:

- क) चीन की भारत के लिए सीआईएफ निर्यात कीमत में काफी गिरावट आई है;
- ख) सीआईएफ निर्यात कीमत में गिरावट के फलस्वरूप चीन जन.गण. से हुए आयातों की लैंडेड कीमत में भी काफी गिरावट आई है;
- ग) चीन से हुए आयातों की लैंडेड कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से काफी कम रही है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में काफी कटौती हुई है ।
- घ) आयातों की वजह से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में मंदी आई है ।

उपरोक्त सारणी से विदित है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रभाव प्रतिकूल रहा है ।

घरेलू उद्योग संबंधी आर्थिक कारक

31. नीचे दी गई तालिका में क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा बिक्रियां दर्शाई गई हैं-

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|---------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| क्षमता (मी.टन) | 3600 | 3600 | 3600 | 3600 |
| उत्पादन (मी.टन) | 1945 | 2156 | 2000 | 2456 |
| संयंत्र उपयोगिता (%) | 54.04 | 59.89 | 55.55 | 68.22 |
| घरेलू बिक्रियां (मी.टन) | 1783 | 1833 | 1711 | 1941 |
| निर्यात बिक्रियां (मी.टन) | 298 | 330 | 347 | 653 |
| मांग (मी.टन) | 2011 | 2333 | 2159 | 2633 |
| मांग में बाजार हिस्सा (%) | 88.64 | 78.58 | 79.26 | 73.72 |

यह देखा जाता है कि:-

- क) घरेलू उद्योग के उत्पादन में इस अवधि के दौरान समग्र रूप से लगभग 26% की वृद्धि हुई जो बढ़ी हुई क्षमता उपयोग के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप हुई है ।
- ख) हालांकि उत्पादन में लगभग 26% की वृद्धि तो हुई लेकिन घरेलू बिक्रियों में उस अनुपात से वृद्धि नहीं हुई । वास्तव में, बिक्रियों में वृद्धि केवल लगभग 9% की हुई।
- ग) हालांकि मांग में लगभग 31% की वृद्धि हुई (और उत्पादन में वृद्धि मांग में इस वृद्धि से भी कम रही) लेकिन बिक्रियों में केवल 9% की ही वृद्धि हुई । घरेलू उद्योग मांग में हुई वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्रियों में वृद्धि नहीं कर सका है । हालांकि उत्पादन में वृद्धि तो हुई है लेकिन बिक्रियों में वृद्धि अधिकांश रूप में निर्यातों में वृद्धि होने के कारण हुई है ।

32. घरेलू उद्योग की मालसूची नीचे दर्शाई गई है:-

| मालसूची (मी. टन) | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|------------------|---------|---------|---------|-----------|
| प्रारंभिक स्टॉक | 512 | 376 | 367 | 308 |
| अंतिम स्टॉक | 376 | 367 | 308 | 170 |
| औसत स्टॉक | 444 | 372 | 338 | 239 |

33. घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा और भारत में चीन जन.गण. का बाजार हिस्सा इस अवधि के दौरान निम्नानुसार रहा:-

| % हिस्सा | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| घरेलू उद्योग का हिस्सा | 88.64 | 78.58 | 79.26 | 73.72 |
| चीन का हिस्सा | 4.40 | 7.32 | 10.99 | 19.28 |

यह देखा जाता है कि भारत में मांग की दृष्टि से घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। हालांकि बिक्रियों में वृद्धि हुई लेकिन बिक्री मात्रो में वृद्धि भारत में उत्पादन तथा मांग में हुई वृद्धि से बहुत कम रही। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग ने बाजार हिस्सा चीन जन.गण. से हुए आयातों की वजह से गंवा दिया।

34. घरेलू बाजार में संबद्ध माल की बिक्रियों से घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ नीचे सारणी में बताए जा रहे हैं-

| सूचीकृत (लाख रु०) | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| कर पूर्व लाभ | | | | |
| कुल लाभ | -100 | 367 | -2436 | -2268 |
| प्रति यूनिट | -100 | 358 | -2547 | -2090 |
| ब्याज एवं कर पूर्व लाभ | 100 | 119 | -357 | -325 |

यह देखा जाता है कि संबद्ध माल के लिए घरेलू उद्योग की हानियों में इस अवधि के दौरान निरंतर काफी वृद्धि होती रही है।

35. कंपनी द्वारा दी गई मजदूरियां और प्रति यूनिट उत्पादन की मजदूरी निम्नानुसार है:-

| सूचीकृत | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|---|---------|---------|---------|-----------|
| मजदूरी (लाख रु०) | 100 | 98 | 95 | 123 |
| प्रति यूनिट उत्पादन मजदूरी - रु०/किग्रा. | 100 | 88 | 93 | 97 |

36. संबद्ध माल के लिए कर्मचारियों की संख्या का निर्णय संबद्ध माल के लिए वेतन एवं मजदूरियों (लागत लेखा परीक्षा के अनुसार) के अनुपात में यूनिट के कुल वेतन तथा मजदूरियों की तुलना में किया गया है:

| सूचीकृत | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|-----------------------|---------|---------|---------|-----------|
| कर्मचारियों की संख्या | 100 | 68 | 76 | 83 |

जहां रोजगार में वृद्धि हुई है लेकिन वहां उत्पादन में वृद्धि तो हुई है लेकिन वास्तव में बिक्री मात्रा तथा रोजगार में गिरावट आई है, जैसाकि नीचे दी गई सारणी से देखा जा सकेगा:

37. पूंजी निवेश पर आय की गणना सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म पर लगाई गई पूंजी और घरेलू बिक्रियों पर ब्याज पूर्व लाभ पर विचार करते हुए की गई है जो नीचे दर्शाई गई है:

| सूचीकृत | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|-------------------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| लगाई गई पूंजी (लाख रु०) | 100 | 85 | 91 | 87 |
| ब्याज एवं कर पूर्व लाभ (लाख रु०) | 100 | 119 | -357 | -325 |
| पूंजी निवेश पर आय(%) | 100 | 140 | -391 | -375 |

यह देखा जाता है कि जबकि लगाई गई पूंजी में गिरावट दर्शाई गई है लेकिन ब्याज एवं कर पूर्व लाभ में अत्यधिक गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप लगाई गई पूंजी पर आय में इस सीमा तक बहुत गिरावट आई है कि वह एक सकारात्मक स्थिति की तुलना में नकारात्मक हो गई।

38. नकद प्रवाह पर प्रभाव: चूंकि आवेदक एक बहु-उत्पाद कंपनी है और इस उत्पाद का डिभिजन केवल इसी उत्पाद के लिए ही समर्पित नहीं है। अतः यह यथोचित समझा जाता है कि नकद लाभों का निर्धारण किया जाए ताकि नकद प्रवाह का रुझान निर्धारित हो सके। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद की स्थिति नीचे दी गई तालिका में दर्शाई गई है:

| सूचीकृत (लाख रु०) | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|-------------------|---------|---------|---------|-----------|
| कर पूर्व लाभ | -100 | 367 | -2436 | -2268 |
| नकद लाभ | 100 | 2547 | -11304 | -10930 |

यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग के नकद लाभ क्षति अवधि के दौरान उस सीमा तक काफी गिर गए हैं कि घरेलू उद्योग अब नकद हानियों का सामना कर रहा है। नकद लाभों में इस गिरावट का कारण आयात की लैंडेड कीमतों के प्रत्युत्तर में बिक्री कीमतों में आई गिरावट है।

39. संबद्ध माल के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है जैसाकि नीचे दी गई सारणी से विदित होगा:-

| सूचीकृत | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | जांच अवधि |
|---------------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| प्रति कर्मचारी उत्पादन (मी. टन) | 100.00 | 162.89 | 134.91 | 151.89 |

घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वही रुझान परिलक्षित होता है जोकि ऊपर उल्लिखित रोजागार में गिरावट के साथ उत्पादन में रहा था। किंतु, उत्पादकता में काफी वृद्धि होने के बावजूद उत्पादकता में गिरावट आई है जैसाकि नीचे दिए गए आंकड़ों से विदित होता है।

40. वृद्धि:- बिक्री मात्रा, उत्पादन तथा मांग में सकारात्मक वृद्धि हुई है। किंतु, बिक्री कीमतों, बिक्री मात्रा, बाजार हिस्से, लाभ, नकद प्रवाह में वृद्धि हुई है लेकिन आरओआई नकारात्मक रही है। बिक्री मात्रा तथा उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि के बावजूद बिक्री मूल्यों में नकारात्मक वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा प्रति यूनिट निवल बिक्री वसूली में गिरावट का स्पष्ट परिणाम है। बिक्री कीमतों में गिरावट से घरेलू उद्योग के लाभ, नकद प्रवाह और आरओआई पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

41. नए पूंजी-निवेश करने की सामर्थ्य:- इस कंपनी को बड़ी वित्तीय हानियां हो रही हैं और उन्होंने इस उत्पाद में कोई नया पूंजी निवेश नहीं किया है। आवेदक ने दावा किया कि उनके लिए पूंजी निवेश करना कठिन होगा।

घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति पर आयातकों के तर्क:

42. क) आयातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को वैकल्पिक उत्पादों से हानि हो रही है। इस बात का दावा किया जाता है कि संबद्ध माल की मांग में पिछले कई दशकों से गिरावट आती रही है। ऐसे अनेक प्रतिस्थापन उत्पाद हैं जो किसी कागज के पैकेजिंग के लिए उभरकर सामने आए हैं। अपनी अवधारणा के समर्थन में इस आयातक ने फरवरी, 2004 में प्रकाशित "फ्री डोनिया ग्रुप" से एक प्रकाशन का हवाला दिया है जिसमें कहा गया है कि सेलोफेन से ओरिएंटलड पोलिप्रोपीलीन से प्रतिस्पर्धा की वजह से उसकी मात्रा में लगातार गिरावट आएगी।

प्राधिकारी नोट करता है कि आवेदक कंपनी की वार्षिक रिपोर्टों में भी वैकल्पिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा का उल्लेख है। किंतु, यह नोट किया जाता है कि वैकल्पिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा इस उद्योग में कोई नई घटना नहीं है। आवेदक की वार्षिक रिपोर्टों और आयातक के दावे से भी यह नोट किया जाता है कि वैकल्पिक उत्पाद पिछले कई दशकों में विचाराधीन उत्पाद से प्रतिस्पर्धा करते रहे हैं। किंतु, यह नोट किया जाता है कि विगत में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन वैकल्पिक उत्पादों से ऐसी प्रतिस्पर्धा के बावजूद काफी बेहतर रहा था। इस उत्पादन में क्षति अवधि के दौरान वास्तव में गिरावट आई है जबकि पाटित आयातों में वृद्धि हुई और उससे ऐसे पाटित आयातों द्वारा काफी कीमत कटौती हुई है।

ख) विचाराधीन उत्पाद एक रंजक उत्पाद है।

प्रत्युत्तरदाता आयात ने दावा किया है कि सेलोफेन फिल्म एक रंजक मद है और उसके विश्वव्यापी उत्पादन और मांग में गिरावट आ रही है। आयातक ने इस संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई विश्वव्यापी उद्योग रिपोर्ट का भी हवाला दिया है।

प्राधिकारी समझता है कि यह मुद्दा मौजूदा जांच में बिल्कुल असंगत है। इस रिपोर्ट में विश्व मांग में काफी गिरावट दर्शाई गई है जबकि भारत में मांग में क्षति अवधि के

दौरान वृद्धि दर्शाई गई है जैसाकि पहले बताया गया है । इसके अलावा, आवेदक को विगत में लाभ होता रहा है और अब वह वित्तीय हानियों का सामना कर रहा है जो आयातों में वृद्धि तथा काफी कीमत कटौती के संदर्भ में है । यदि यह मान लिया जाए कि यह उत्पाद एक रंजक उत्पाद है और विश्व बाजार में उसकी मांग घट रही है तो उससे घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट के लिए प्रमुख कारण प्रतीत नहीं होता है ।

ग) आयातकों ने दावा किया है कि चीन से आयातित हो रहा माल घटिया क्वालिटी का है और उसके कारण घरेलू उद्योग को हानि नहीं हो सकती और अगलग-अलग क्वालिटी ग्रेड परस्पर परिवर्तनीय नहीं हैं ।

आयातकों के निवेदनों के उत्तर में आवेदक ने दावा किया है कि:-

- (i) सभी आयात घटिया क्वालिटी के नहीं हैं;
- (ii) आयातित उत्पाद से घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । प्रत्युत्तरदाता आयातक ने स्वयं इस बात का दावा किया है कि घरेलू उद्योग की काफी बिक्रियां अच्छी क्वालिटी वाले माल की हुई हैं । मामला यदि ऐसा है तो इसके अलावा कोई कारण नहीं है बल्कि पाटित आयात है जिससे घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली में गिरावट आई है । घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रतिकूल प्रभाव विदित हैं और इसमें आयातित उत्पाद की क्वालिटी का कोई संबंध नहीं है;
- (iii) क्वालिटी में अंतर कीमत समायोजन का ऐसा प्रश्न है जिसके लिए चीन के उत्पादक तथा कुछ अन्य इच्छुक पक्षकारों से यह अपेक्षा है कि वे घरेलू उद्योग की कीमतों से तुलना के प्रयोजनार्थ मात्रा संबंधी समायोजन कर लें;
- (iv) आयातित उत्पाद से फिल्मों के सभी प्रकारों की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है हालांकि आयातों की लैंडेड कीमत की तुलना तीसरी क्वालिटी के उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से की जाती है लेकिन कीमत कटौती काफी अधिक है ।

प्राधिकारी नोट करता है कि क्वालिटी में अंतर का यह मतलब नहीं है कि घरेलू उत्पाद आयातित उत्पाद की समान वस्तु है। इसके अलावा, जैसाकि ऊपर नोट किया गया है, घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में वास्तव में गिरावट आई है। हालांकि यह माना जाता है कि आयातित उत्पाद घटिया क्वालिटी का है लेकिन यह विदित है कि घरेलू उद्योग को बाजार में पाटित आयातों की वजह से वास्तविक हानि हुई है।

निष्कर्ष

43. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र दृष्टि से और भारत में संबद्ध माल के आयातों, उत्पादन तथा मांग की दृष्टि से काफी वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में काफी गिरावट आई है। पाटित आयातों द्वारा कीमत पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है क्योंकि इन आयातों की वजह से काफी कीमत कटौती हुई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों पर काफी दबाव पड़ा है। घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में की गई गिरावट के बावजूद कीमत कटौती का अधिक रहना जारी है जिसके परिणामस्वरूप आयात मात्रा और उनके बाजार हिस्से में वृद्धि होना जारी रहा है।
44. जहां तक घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन का सवाल है, बिक्री मात्रा में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि से कम, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट, बिक्री मात्रा में वृद्धि के बावजूद बिक्री मूल्यों में गिरावट, कीमतों में काफी गिरावट, अधिक वित्तीय हानियों तक लाभ की स्थिति से लाभ में गिरावट, नकद प्रवाह तथा नकारात्मक तक सकारात्मक की स्थिति तक पूंजी निवेश पर आय में गिरावट घरेलू कीमतों पर सतत रूप से प्रतिकूल प्रभाव, रोजगार में सामूहिक तथा संचयी दृष्टि से गिरावट से साबित होता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
45. हालांकि उत्पादन, क्षमता उपयोग, उत्पादकता, मजदूरियों में सकारात्मक रुझान दर्शाया गया है लेकिन घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट और संबद्ध माल के प्रचालन में घरेलू उद्योग को हुई बहुत वित्तीय हानियों से साबित होता है कि उसे वास्तविक क्षति हुई है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष दिया जाता है कि घरेलू उद्योग को काफी वास्तविक हानि हुई है।

ज. कारणात्मक संबंध

46. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। यह पाया गया कि:-

क) तीसरे देशों से आयात:- अन्य देशों से सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म के आयात या तो नगण्य (न्यूनतम) रहे हैं अथवा निर्यात कीमत अपेक्षतया अधिक रही है। अन्य देशों से होने वाले आयातों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति प्रतीत नहीं होती है।

ख) मांग में मंदी:- संबद्ध माल की मांग में वृद्धि हुई है। मांग में संभाव्य वृद्धि से प्रतीत नहीं होता है कि इससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। हालांकि यह तर्क दिया गया है कि विचाराधीन उत्पाद एक रंजक उत्पाद है और वह वैकल्पिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है लेकिन प्राधिकारी नोट करता है कि ऐसे वैकल्पिक उत्पाद काफी लंबी अवधि(लगभग एक दशक) तक रहे हैं और ऐसे वैकल्पिक उत्पादों की तुलना में इस उत्पाद के संबंध में बाजार स्थिति में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं आया है। इसके अलावा, चूंकि मांग में सकारात्मक रुझान रहा है इसलिए यह तथ्य कि क्या अथवा नहीं यह उत्पाद रंजक उत्पाद है, न तो वास्तव में सही है और न ही यह भारतीय बाजार के संदर्भ में संगत ही है। वास्तव में, इस संबंध में विश्वास अमरीकी बाजार के संबंध में कुछ बहुत पुराने रिपोर्ट के आधार पर किया गया है जो भारतीय बाजार के लिए लागू नहीं हो सकता।

ग) खपत का पैटर्न:- खपत के पैटर्न में कोई ज्यादा परिवर्तन संज्ञान में नहीं आया है। जहां तक वैकल्पिक उत्पादों से संभावित प्रतिस्पर्धा का संबंध है, जैसाकि पिछले पैराग्राफ में नोट किया गया है, विचाराधीन उत्पाद की मांग में वास्तव में वृद्धि परिलक्षित होती है और इससे प्रतीत नहीं होता है कि खपत के पैटर्न की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

घ) प्रतिस्पर्धा की दशाएं- घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए प्रतिस्पर्धा अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों का कोई भी साक्ष्य प्राधिकारी के संज्ञान में नहीं लाया गया है।

- ड.) प्रौद्योगिकी में परिवर्तन:- क्षति अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में ऐसा कोई विशेष परिवर्तन संज्ञान में नहीं आया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होती ।
- च) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन:- आवेदक के निर्यात निष्पादन में गिरावट नहीं आई है। वास्तव में आवेदक की निर्यात मात्रा में वृद्धि दर्शाई गई है । किंतु, आवेदक ने दावा किया है कि यह निर्यात परिहार्य निर्यात हैं जो पाटित आयातों की वजह से घरेलू बाजार में माल की बिक्री के लिए घरेलू उद्योग की असामर्थ्य के कारण किए गए । इसके अलावा, जहां आवेदक ने दावा किया कि निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई कीमत क्षति तथा लाभ क्षति पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को स्पष्ट रूप से क्षति है और इसे संबंधित उत्पाद के लिए क्षति के आकलन के समय अलग-अलग नहीं किया जा सकता अथवा उसे हटाया नहीं जा सकता है। इस संबंध में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को होने वाली मौजूदा क्षति का आकलन करते समय घरेलू प्रचालनों के ही संगत जानकारी पर विचार किया है ।
- छ) उत्पादकता:- घरेलू उद्योग की उत्पादकता में उत्पादन में हुई वृद्धि के फलस्वरूप वृद्धि हुई है । अतः उत्पादकता में संभाव्य गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कोई संभाव्य कारण नहीं हो सकती ।

कारणात्मक संबंध साबित करने वाले कारक

47. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन संबंधी विश्लेषण से विदित होता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण वास्तव में गिरावट आई है । यह निम्नलिखित से साबित होता है:-
- क) आयात कीमतों और परिणामस्वरूप संबद्ध देश से आयातों की लैंडेड कीमत में तीव्र गिरावट आई है जिससे काफी कीमत कटौती हुई है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों में गिरावट करने को बाध्य होना पड़ा ।
- ख) घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमत में गिरावट करने से इस कंपनी के लाभ, नकद प्रवाह तथा पूंजी निवेश पर आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- ग) घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में गिरावट किए जाने के बावजूद आयात सस्ते रहे हैं । इसके परिणामस्वरूप पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है । हालांकि घरेलू

उद्योग द्वारा कीमतों में गिरावट की गई थी । इसके प्रत्यक्ष रूप से परिणामस्वरूप आयात मात्राओं में लगातार वृद्धि होती रही ।

- घ) बहुत सकारात्मक कीमत कटौती के परिणामस्वरूप संबद्ध देश से हुए आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई । इसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप हालांकि भारत में मांग में पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई लेकिन घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है ।
- ड.) काफी कीमत कटौती होने और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में परिणामी गिरावट आने के फलस्वरूप एक ऐसी स्थिति बन गई जहां घरेलू उद्योग उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में वृद्धि करने के बावजूद अपनी बिक्री मात्रा में वृद्धि नहीं कर सका ।
- च) बिक्री कीमतों में गिरावट के फलस्वरूप एक ऐसी स्थिति बन गई जहां हालांकि बिक्री मात्रा में वृद्धि तो हुई लेकिन बिक्री मूल्यों में गिरावट आ गई ।
- छ) घरेलू उद्योग की बाजार मांग में वृद्धि और बिक्री कीमतों में गिरावट के बावजूद घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आ गई क्योंकि आयातों की लैंडेड कीमत में काफी गिरावट रही और आयात मूल्यों में वृद्धि रही । इससे घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा ।

इस प्रकार, निष्कर्ष दिया जाता है कि पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

झ. अन्य मुद्दे

- 48. एकमात्र प्रत्युत्तरदाता आयातक ने तर्क दिया कि अद्यतन 2005 इकोनामिक फ्रीडम इंडेक्स ऑफ हैरीटेज फाउंडेशन में भारत की स्थिति खराब है । अतः पाटनरोधी कार्यवाही का प्रयोग कम होना चाहिए । इस बात का भी दावा किया गया है कि सेलोफेन फिल्म आवेदक के कुल उत्पादन का एक छोटा सा भाग है और इसीलिए उस पर पाटनरोधीक शुल्क लगाने का विचार अपेक्षित नहीं होता है और वो भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समुदाय में भारत की खराब स्थिति को देखते हुए ।

- १ प्राधिकारी यह समझता है कि पाटनरोधी जांच उत्पाद विशिष्ट होती है और आवेदक के कुल कारोबार में इस उत्पाद का हिस्सा इस बात के निर्णय के लिए संगत नहीं है कि क्या इस उत्पाद का पाटन किया जा रहा है और क्या उससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

ट. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

49. प्राधिकारी नोट करता है कि पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्य रूप से, पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों द्वारा भारतीय उद्योग को होने वाली क्षति समाप्त करना होता है ताकि भारतीय बाजार में एक मुक्त तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनर्स्थापित की जा सके जोकि देश के सामान्य हित में भी होता है। पाटनरोधी उपायों के करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी तरह रुकेंगे नहीं और इसीलिए उससे उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ठ. निष्कर्ष:

50. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि:-

- क) भारत को संबद्ध देश से संबद्ध माल का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।
- ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- ग) यह क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

ड. सिफारिशें

51. प्राधिकारी नोट करता है कि यह जांच प्रारंभ की गई और इसे सभी इच्छुक पक्षकारों को अधिसूचित किया गया और निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों को इस बात के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया कि वे पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंधों के पहलू पर सकारात्मक जानकारी प्रदान करें। पाटन, क्षति तथा पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की उपर्युक्त नियमावली के अनुसार जांच प्रारंभ तथा उसको पूरा करने पर और संबद्ध देश के विरुद्ध अनंतिम तौर पर सकारात्मक पाटन मार्जिन को साबित किए जाने के बाद और यह निष्कर्ष

किए जाने के बाद कि घरेलू उद्योग को ऐसी पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति होती है, प्राधिकारी की राय है कि जांच अवधि के पूरा होने तक पाटन तथा क्षति को रोकने के लिए अनंतिम उपाय करना आवश्यक है।

52. अतः प्राधिकारी नीचे वर्णित प्रारूप तथा तरीके में संबद्ध देश से संबद्ध माल के आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझता है और इसकी सिफारिश करता है।
53. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए अपेक्षतया कम शुल्क संबंधी नियम के संबंध में प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन से कम की बराबर राशि का अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है जिससे घरेलू उद्योग को हो रही क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में इंगित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है जो इस संबंध में संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के सभी आयातों पर केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी होने वाली अधिसूचना की तारीख से प्रभावी होगा।

शुल्क तालिका

| क्र.स. | उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद | माल का विवरण | विशेष विवरण | उदभव का देश | निर्यात का देश | उत्पादक | निर्यातक | शुल्क राशि | माप की इकाई | मुद्रा |
|--------|------------------------|--|-------------|-------------|----------------|---------|----------|------------|-------------|--------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 1. | 3920 | सेलफोन ट्रांसपेरेंट फिल्म (जोकि ट्रांसपेरेंट के रूप में भी जाना जाता है) | सभी ग्रेड | चीन जन.गण | कोई | कोई | कोई | 1.90 | कि०ग्रा० | अम.डा. |
| 2. | 3920 | -वही- | -वही- | कोई | चीन जन.गण | कोई | कोई | 1.90 | कि०ग्रा० | अम.डा. |

ढ. अगली प्रक्रिया:

54. प्रारंभिक जांच-परिणामों को अधिसूचित किए जाने के पश्चात् निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

- (क) प्राधिकारी इन जांच परिणामों पर सभी इच्छुक पक्षकारों से टिप्पणियां आमंत्रित करता है और अंतिम जांच परिणाम में उस पर विचार किया जाएगा;
- (ख) संबंधित ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, आवेदकों तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों को प्राधिकारी द्वारा अलग-अलग पत्र भेजे जा रहे हैं जो उक्त आशय के पत्र के जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने-अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे। कोई अन्य पक्षकार भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने-अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- (ग) प्राधिकारी यथा-आवश्यकतानुसार वांछित सीमा तक और आगे पड़ताल करेगा;
- (घ) प्राधिकारी आवश्यक तथ्यों का खुलासा अंतिम जांच परिणामों की घोषणा से पहले करेगा।

क्रिस्टी एल. फर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 3rd February, 2006

Preliminary Findings**Subject: Antidumping investigation involving import of Cellophane Transparent Film exported from or originating in China PR**

1. No. 14/7/2005-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and thereafter and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 as amended (hereinafter referred to as the Anti Dumping Rules) thereof:
 2. Whereas M/s. Kesoram Rayon, unit of M/s. Kesoram Industries, Kolkatta, (hereinafter referred to as applicant) filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Customs Tariff Act and the AD Rules alleging dumping of Cellophane Transparent Film (herein after referred to as subject goods) originating in or exported from the People's Republic of China (herein after referred to as "subject country" or China PR) and requested for initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods.
 3. And whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 27th September 2005 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country in accordance with the Rule 6 of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.
- A. Procedure**
4. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigations by the Authority.

(i) The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 27th September 2005 to the Embassy of the subject country in India, known exporters from the subject country, importers, users and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the date of initiation notification.

(ii) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassy of China PR in accordance with Rule 6 supra.

(iii) The Embassy of the People's Republic of China in India, was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6 with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to them, alongwith the names and addresses of the exporters.

(iv) A questionnaire for according market economy treatment was forwarded to all the known exporters and the Embassy of the Peoples' Republic of China. For the purpose of initiation, normal value had been based on the basis of price of exports from United Kingdom(UK) to India as appropriate estimate of normal value. In an alternate to the price from a market economy third country to India, applicant had also provided estimates of normal value in China as price payable in India in terms of Para 7 of Annexure I to the Rules. Subsequent to initiation, the Authority informed the known exporters that the Authority proposed to examine the claim of the applicant of treating China as non market economy in the light of para (7) & (8) of Annexure-I of the Anti-Dumping Rules as amended. The concerned exporters / producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish necessary information / sufficient evidence as mentioned in paragraph 8 of Annexure-I to enable the Designated Authority to consider whether market economy treatment could be granted to cooperating exporters / producers who could demonstrate that they satisfied the criteria stipulated in the said paragraph.

(v) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters in China PR in accordance with Rule 6(4);

- 1 ShangYu Cellophane Co. Ltd.
 Dasanjiao Development Zone,
 ShangYu City, Zhejiang Province,
 China. ZIP-312300

- 2 Yuyao Paper Mill
NO.328 Jiang-Yuan Street,
Yuyao City, Zhejiang,
China- ZIP-315400
- 3 Weifang Henglian Cellophane Co. Ltd.
409, Wolong East Street,
Weifang, Shandong,
China- ZIP-261031

vi) In response to the above notification none of the exporter has responded to the questionnaire.

vii) Questionnaires were sent to following known importers and users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

- M/s Hindustan Lever Ltd
- M/s Mahavir Spinning Mills Ltd
- M/s R P J Packaging Pvt Ltd
- M/s Phoenix Yule Limited
- M/s Indian Chemical Company
- M/s C. Patel & Company
- M/s Harbanslal Malhotra & Sons Ltd
- M/s Zaibe Trading Co
- M/s The Paper Products Ltd
- M/s G D Pharmaceuticals Ltd
- M/s Choice Laboratories
- M/s Kalyan Confectionery Pvt Ltd
- M/s. Reliance Industries Ltd.
- M/s Kamal Bros
- M/s Kwaliti Rotoprints
- M/s Seth Chemical Works Pvt Ltd
- M/s Tea Packars (India) Pvt Ltd
- M/s EZY Pack
- M/s Threads (India) Limited
- M/s Mysore Scents Company
- M/s Phils Laminations
- M/s Daga Printing & Packaging Industries
- M/s Jyoti Coaters P Ltd
- M/s Trend International

viii) In response to above notification M/s Mukesh Paper Mart and M/s. Gulshan Rai Jain & Sons have filed their submissions.

ix) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigations;

x) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;

xi) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry. For this purpose, domestic industry was directed to provide its cost of production and income statement with regard to product under consideration duly certified by a practicing cost accountant, which was also verified by the Designated Authority.

xii) *** in this Notification represents information furnished by the applicant on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;

xiii) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2004 to 31st March 2005 (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from April 2001-March 2002, April 2002-March 2003, April 2003-March 2004 and the POI.

B. Product under consideration & like article

5. The product under consideration is Cellophane Transparent Film also known as Transparent Paper or TP film, originating in or exported from People's Republic of China. Transparent Film is a re-generated cellulose film of glass clear transparency and sparkle. It is flexible, yet tough and withstands all the beatings in an automatic packaging operation and shows outstanding machine ability as well as dimensional stability. It is made of wood pulp, hence it is non-toxic and biodegradable.
6. TP films can be coloured or white. Transparent Film is available in sheet and Roll forms. Presently various types of TP Films having many Grades are produced. All grades are within the scope of product under consideration. It is an ideal packaging material,
7. TP Films are classified under Chapter 39, subheading 392071 of the Customs Tariff Act in the category of Plastics and Articles thereof. However Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of investigation.

Comments from importers

8. The sole responding importer claimed that imported product is of lower quality and is neither a like product to the domestic industry nor could have caused injury to the domestic industry. The importer has claimed the imported product as not being a like product on the basis of a number of parameters, which includes degree of commercial interchangeability, functions and end users of the merchandise, pricing, quality, channels of distribution, customer and producer perceptions of the products, commercial prestige, machinability of the products.
9. It has been argued by the importers that three grades of TP is manufactured and only grade III is imported which is not comparable to other superior grades. Further grade III is produced by DI in insignificant quantity.

Views of domestic industry

10. Applicant has claimed that there is no significant difference between the Cellophane Transparent Film produced by the domestic producers and the products imported from subject country. They are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Applicant claims that the two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
11. Applicant either directly or through its dealers competes with these traders/resellers for the same general category of consumers. Significant volume of sales by the applicant companies is also through resellers. All resellers, whether dealing in the domestic or import product are supplying the product to the same general category of customers.

Examination by the Authority

12. Rule 2(d) of AD Rules defines Like Article as

“an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation.”

13. The product for which application for imposition of anti dumping duty was filed by the domestic industry is "Cellophane Transparent Film also known as Transparent Paper". Anti dumping investigation was

initiated accordingly defining the product under consideration. The applicant had claimed that goods produced by them are like article to the goods originating or exported from China PR. The importer in their submissions has claimed that the goods imported by them are of inferior quality. However, difference in quality does not render the product as different from Cellophane Transparent Film. The product still remains Cellophane Transparent Film also known as Transparent Paper, as the product contains the same basic physical and chemical characteristics and has the same functions & uses. Such being the case, it can not be said that mere difference in quality renders the product imported by the importer as different from "Cellophane Transparent Film also known as Transparent Paper", the product under consideration.

14. The goods produced by the domestic industry are like article to the imported product under consideration. The alleged difference in the quality may result in difference in prices. However, possible differences in physical characteristics arising as a result of difference in quality require a price adjustment. As pointed out by domestic industry, Para 6(i) of Annexure-I dealing with principles governing determination of normal value, export price and dumping margin in fact provide for a possible price adjustment on account of difference in physical characteristics. However, the importer has not claimed such a price difference with quantifiable evidence. Further, such an adjustment can generally be claimed by a producer in China only. Since none of the producers in China have responded to the Authority, no such price adjustment is feasible.
15. After examining the above claim, it is provisionally concluded that there is no difference in the product imported from China and produced by the domestic industry, except with regard to alleged difference of quality. Even if it is assumed that the imported product is of lower quality, this difference in quality can not render the imported and domestic product different product within the meaning of the Rule 2(d). It is also relevant to point out that the difference in quality is not a conscious business decision of any producer. The product is classified into different grades based on perceptible quality differences in the product after it is manufactured. Therefore, the cost of production per unit of different grades remains the same.
16. In view of the above, for the purpose of preliminary findings the Authority holds that the goods produced by the domestic industry are like article to the goods imported from China PR within the meaning of the Rules.

C. Domestic Industry

17. Rule 2(b) defines domestic industry as under:-

(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry:

Application for imposition of anti dumping duty was filed by M/s Kesoram Rayon, (a unit of Kesoram Industries Limited). Applicant claimed itself as the sole producer of the product in India. The responding importer also has not disputed the fact that the applicant is the sole producer of the product in India. Investigation also has not revealed existence of any other producer in the Country. In view of the same, Authority holds that applicant constitutes the domestic industry for the purpose of this anti dumping investigation.

D. Normal value

Claims of applicant

18. Applicant claimed that China is a non-market economy. No country has granted market economy country status to China after following detailed evaluation procedure, examination and evaluation. Even China agreed in the accession treaty that WTO Members could use an NME antidumping methodology through December 11, 2016. China has been treated as non-market economy by European Commission and United States in the past three years. European Union and United States are members of World Trade Organization. In India also, the Designated Authority has treated China as non-market economy. The Designated Authority has treated China as non-market economy in practically all the investigations initiated against China after the amendment dated 31st May, 2002. Even after the amendment dated 4th Jan., 02, the Designated Authority have treated China as a non-market economy. With regard to treatment of China as non-market economy by other WTO member's countries, European Commission and USA have treated China as a non-market economy country in a number of investigations.
19. Further the domestic industry has pointed out that the sole responding importer claimed that China should be given market economy status, as has been done by the Authority in some other investigations. The Authority may note in this regard that the Rules provide that a Chinese exporter can claim market economy status on the basis of verifiable positive evidence. The Authority has in fact granted such status to

Chinese companies in the past. Such a claim is required to be made by the concerned Chinese producers. However, no such claim has been made by any Chinese producer and therefore the Authority is unable to apply Para 8 of Annexure I to the Rules.

Claims of importers

20. The responding importers claimed that China should be accorded market economy treatment. They further claimed that UK was not an appropriate market economy third country in view of the facts that (a) imports from UK are coated films or Tape-base films, manufactured by Innovia Films-these are not the same as CTF from China, (b) prices in UK are higher, (c) prices in UK differ significantly as per the data given in the petition itself, (d) Indonesia, Thailand, Malaysia are more appropriate surrogate country as cost of production is low in these countries.

Examination by the Authority

21. In anti dumping investigations concerning imports from non market economy countries, normal value has to be determined in accordance with paragraphs 7 & 8 of the Annexure 1 of the AD Rules.
22. The Authority notes that none of the Chinese producers have responded in the form and manner prescribed. None of the Chinese producers have claimed that they should be granted market economy status. Under the circumstances, the Authority is not in a position to apply para 8 of Annexure 1 to the Rules and has to therefore proceed in accordance with para 7 of Annexure 1 to the Rules. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:
- (a) *the price in a market economy third country,*
 - (b) *constructed value in a market economy third country,*
 - (c) *the price from such a third country to other countries, including India.*
 - (d) *the price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin.*
 - (e) *the price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.*
23. Applicant proposed consideration of import price from UK to India an appropriate benchmark for determination of normal value. Applicant supplemented its claim of normal value based on import price from UK with the estimates of cost of production in India, duly adjusted to include selling, general and administrative expenses and reasonable profit. The sole responding importer has objected to consideration of UK prices as an appropriate bench mark on a number of grounds.

24. The Authority notes that applicant provided an evidence of price in a market economy third country viz UK . While the responding importers disputed the claim and submitted that UK is not an appropriate market economy third country, no verifiable evidence has been provided by them suggesting some other market economy third country. Under the circumstances, the Authority has provisionally determined normal value considering price actually payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin, pending further investigations, in accordance with provisions under Annexure-I of the Rules. The normal value is thus provisionally determined as Rs.*** per KG.

E. EXPORT PRICE

25. In the application submitted for initiation of investigation , applicant had worked out export price based on transaction wise data provided by the DGCI&S and IBIS. Applicant had claimed that the transaction wise data provided by DGCI&S does not include all imports reported in India, as the imports have been reported in a number of customs classification. Applicant claimed that the imports have been reported under different customs classification nos. 39207111, 39207119, 39207129, 39209929 and 48064090. Applicant further claimed that in fact, imports from other countries have been reported in some other classification also.

26. There is no denial of the claim of the applicant by the sole responding importer. Information submitted by the importer on record shows that the goods have been reported in different customs classifications as mentioned above. In view of the above, the export price has been determined on the basis of transaction wise imports data after including imports reported in customs classifications no. 392071 and other customs headings. The average import price comes to Rs.26.43 per kg (US \$ 0.58 per kg). After considering price adjustments claimed by the domestic industry on account of inland freight, marine insurance, commission, ocean freight, bank charges & port expenses, the ex-factory export price comes to Rs.*** per KG (US \$ *** per KG).

F. DUMPING MARGIN

27. Authority notes that the comparison made between normal value and export price must be fair comparison. Authority has therefore determined both the normal value and export price at ex-factory level. Both the normal value and export price pertains to the same period. Both the prices are free of taxes. Thus, the Authority considers that the comparison made constitutes a fair comparison. Considering the normal value and export price determined as detailed above, dumping margin has

been determined, which comes to **Rs.*** per KG (US \$ *** per KG)** which works out as 369% of net export price.

G. Injury to the domestic industry

Import volumes and market share

28. The volume of dumped imports, and their share in imports from various countries and production & consumption in India are given in the table below:

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|-------------------------------------|---------|---------|---------|-------|
| Import volumes (MT) | | | | |
| From China | 88 | 171 | 237 | 508 |
| Total imports | 229 | 500 | 448 | 692 |
| Share of China in imports % | 38.7 | 34.17 | 52.96 | 73.37 |
| Demand/ Consumption (MT) | 2011 | 2333 | 2159 | 2633 |
| Share of China in Demand in India % | 4.40 | 7.32 | 10.99 | 19.28 |
| Imports in relation to production % | 4.55 | 7.92 | 11.86 | 20.67 |

- It is found that the imports from China PR increased over the period in absolute terms and also in relation to imports into India, production in India and consumption in India.
- Imports from China PR in relation to total imports of the product under consideration in India increased from 39% to 73% over the injury period excepting the year 2002-03.
- Imports from China PR in relation to production in India increased from 4.55% (2001-02) to 20.67% (2004-05).
- Imports from China PR in relation to demand also increased from 4.40% to 19.28% over the period.

From the above, it is evidently clear that imports from subject country have shown an increase during the injury period both in absolute terms and also relative to domestic production and consumption.

Price effect of imports

29. Net sales realization of the domestic industry has been arrived at by considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1%

landing charges and applicable basic customs duty. The trend of various prices is as given in the table below:-

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|----------------------------------|---------|---------|---------|-------|
| CIF export price (Rs./kg.) | 64.51 | 94.76 | 30.36 | 26.43 |
| % decline over Previous Year | | (46.89) | 67.96 | 12.94 |
| Landed price of imports (Rs./KG) | 84.06 | 123.47 | 38.02 | 31.77 |
| % decline over Previous year | | (46.89) | 69.21 | 16.44 |
| Net sales realisation (Indexed) | 100 | 98 | 81 | 83 |
| Price Undercutting (Indexed) | 100 | 15 | 142 | 158 |
| Cost of production (Indexed) | 100 | 95 | 97 | 96 |

30. It is noted that

- CIF export price into India from China has declined significantly;
- As a result of decline in CIF import price, landed price of imports from China PR also declined significantly.
- Landed price of imports from China have been significantly below the net sales realization of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.
- Imports are depressing the prices of the domestic industry in the market.

It is evident from the above table that the effect of dumped imports on the domestic industry has been adverse.

Economic parameters relating to the domestic industry

31. Table below shows capacity, production, capacity utilization and sales.

| | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|----------------------------|---------|---------|---------|-------|
| Capacity (MT) | 3600 | 3600 | 3600 | 3600 |
| Production (MT) | 1945 | 2156 | 2000 | 2456 |
| Plant utilization(%) | 54.04 | 59.89 | 55.55 | 68.22 |
| Domestic Sales (MT) | 1783 | 1833 | 1711 | 1941 |
| Export Sales (MT) | 298 | 330 | 347 | 653 |
| Demand (MT) | 2011 | 2333 | 2159 | 2633 |
| Market share in Demand (%) | 88.64 | 78.58 | 79.26 | 73.72 |

It is seen that:-

- a) Production of the domestic industry increased in absolute terms by about 26% over the period. As a direct consequence, capacity utilization increased.
- b) Though production increased by about 26%, domestic sales did not increase proportionately. In fact, increase in sales volumes was only about 9%;
- c) Even when demand increased by about 31% (and increase in production was less than this increase in demand), sales increased only by 9%.

32. The inventories with the domestic industry have been as shown below:-

| Inventories (MT) | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|------------------|---------|---------|---------|-----|
| Opening stock | 512 | 376 | 367 | 308 |
| Closing stock | 376 | 367 | 308 | 170 |
| Average stock | 444 | 372 | 338 | 239 |

It is noted that level of average inventories has reduced during the injury period reflecting improved off-takes.

33. Market share of the domestic industry and of China PR in demand in India was as under over the period:-

| % share | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|----------------------------|---------|---------|---------|-------|
| Share of domestic industry | 88.64 | 78.58 | 79.26 | 73.72 |
| Share of China | 4.40 | 7.32 | 10.99 | 19.28 |

It is seen that the market share of the domestic industry in demand in India declined. Thus, even when sales grew, the increase in sales volumes was far less than increase in production and demand in India. Resultantly, the domestic industry lost market share to imports from China PR.

34. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market are as follows:-

| Indexed Rs. In lacs | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|--------------------------------|---------|---------|---------|-------|
| Profit before tax | | | | |
| Total profit | -100 | 367 | -2436 | -2268 |
| Per unit | -100 | 358 | -2547 | -2090 |
| Profit before interest & taxes | 100 | 119 | -357 | -325 |

It is seen that the losses of the domestic industry for the subject goods have been increasing significantly over the injury period.

35. Wages paid by the company and incidence of wage per unit of production has been as under:-

| Indexed | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|------------------------------------|---------|---------|---------|-----|
| Wages (Rs. Lacs) | 100 | 98 | 95 | 123 |
| Wage per unit of production-Rs./KG | 100 | 88 | 93 | 97 |

36. The no. of employees for the subject goods has been arrived in the ratio of salary and wages for the subject goods (as per the cost audit report) as compared to total salary and wages of the unit.

| Indexed | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|-----------------|---------|---------|---------|-----|
| No. of employee | 100 | 68 | 76 | 83 |

Whereas employment should have increased, given increase in production and sales volumes, employment has in fact declined, as would be seen from the table above.

37. Return On Investment has been calculated by considering capital employed on cellophane transparent film and profit before interest on domestic sales, which shows as under:-

| Indexed | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|--|---------|---------|---------|------|
| Capital employed (Rs. In lacs) | 100 | 85 | 91 | 87 |
| Profit before interest & taxes (Rs. In lacs) | 100 | 119 | -357 | -325 |
| Return On Investment (%) | 100 | 140 | -391 | -375 |

It is seen that whereas the capital employed shows decline, profit before interest & taxes declined very significantly. Resultantly, return on capital employed declined very significantly to such an extent that the same became negative from a situation of positive.

38. Effect on cash flow :- Since the applicant company is a multi product company and even the division relating to the product is not dedicated to the product alone, it is considered more appropriate to determine cash profits in order to determine trends in cash flow. Status of cash of the domestic industry over the injury period have been as under:-

| Indexed (Rs. Lacs) | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|---------------------|---------|---------|---------|--------|
| Profit before taxes | -100 | 367 | -2436 | -2268 |
| Cash profits | 100 | 2547 | -11304 | -10930 |

It is seen that the cash profits of the domestic industry have declined significantly over the injury period to such an extent that the domestic industry is now faced with cash losses. This deterioration in cash profits is directly attributable to decline in the selling prices in response to landed price of imports.

39. Productivity of the domestic industry for subject good has increased, as is evident from the table below:

| Indexed | 2001-02 | 2002-03 | 2003-04 | POI |
|-----------------------------|---------|---------|---------|--------|
| Production per employee(MT) | 100.00 | 162.89 | 134.91 | 151.89 |

Productivity of the domestic industry shows same trend as that of production combined with the fall in employment as mentioned above. However, in spite of significant increase in productivity, the profitability declined as per data given above.

40. Growth :- There is positive growth in sales volumes, production and demand. However, growth in selling prices, sales values, market share, profits, cash flow, ROI has been negative. Negative growth in sales values despite positive growth in sales volumes and production is a clear result of significant reduction in the per unit net sales realisation by the domestic industry. The reduction in selling prices has led to an adverse impact on the profits, cash flow and ROI of the domestic industry.
41. Ability to raise fresh/capital Investments :- The company is suffering huge financial losses and has not made any fresh investments in the product. Applicant claimed that it would be difficult for them to raise investments.

Arguments of importers on injury to the domestic industry

42. a) It has been argued by the importer that the domestic industry is suffering injury from alternate products. It is claimed that demand for the subject goods has been going down over the last several decades. There are several substitutes which have emerged for packaging a paper. In support of its contention, the importer has referred a publication from "Free Donia Group" published in Feb., 2004, which states that Cellophane Film will continue its volume declines because of competition from oriented polypropylene.

Authority notes that annual reports of the applicant company also mention competition from alternate products. However, it is noted that the competition from alternate products is not a new phenomena in this industry. It is noted from the annual reports of the applicant as also claim of the importer that the alternate products have been competing with the product under consideration for past several decades. It is however noted that the performance of the domestic industry, in the past was much better in spite of such competition from alternate products. The performance materially deteriorated over the injury period, with the increase in dumped imports and consequent significant price undercutting caused by such dumped imports.

b) The responding importer has claimed that Cellophane Film is a dying item and the world-wide production and demand is going down. The importer has also referred to Global Industry Report provided by the petitioner in this regard.

The Authority considers that the issue is entirely irrelevant to the present investigations. The Report shows a significant decline in the world demand, whereas the demand in India has shown an increase over the injury period, as discussed hereinabove. Further, the applicant had been making profits in the past and is now faced with significant financial losses, which coincides with the increase in imports and significant price undercutting. Even if it assumed that the product is a dying product in the world market, demand of the product is rising in the Indian market. The lack of demand does not appear to be the major reason for deterioration in performance of the domestic industry.

c) Importers have claimed that the goods being imported from China are of sub-standard quality and could not have caused injury to the domestic industry and different quality grades are not interchangeable.

In reply to the submissions of the importers the applicant has claimed that

- (i) entire imports are not of sub-standard quality;
- (ii) the imported product has had adverse impact on the average selling price of domestic industry. The responding importer itself has claimed that significant sales of the domestic industry are of good quality material. Such being the case, there is no reason, but for the dumped imports, for the net sales realization of the domestic industry to decline. Adverse impact of dumped imports on the prices of the domestic industry is evident, regardless of the quality of the imported product;
- (iii) the difference in quality is question of price adjustment, for which the Chinese producer or some interested party is required to raise

- quantifiable adjustment for the purpose of comparison with the prices of the domestic industry;
- (iv) the imported product affected its prices of all kinds of films, even if the landed price of imports are compared with the selling price of the domestic industry in respect of 3rd quality product, the undercutting is significantly positive.

The Authority notes that the difference in quality does not imply that the domestic product is not a like article to the imported product. Moreover, as noted above, the performance of the domestic industry materially deteriorated. Even if it is assumed that the imported product is of poor quality, it is evident that the domestic industry has suffered material injury as a result of dumped imports in the market.

Conclusions

43. There has been significant increase in the volume of dumped imports from the subject country in absolute terms and also in relation to imports; production and demand of the subject goods in India. Consequently, market share of the domestic industry has significantly declined. There has been significant adverse price effect by dumped imports, as the imports are causing significant price undercutting, which has resulted in significant suppressing effect on the prices of the domestic industry. In spite of reduction in the prices by the domestic industry, the price undercutting continues to be significant, which resulted in continuous increase in import volumes and their market share.
44. As regards performance of the domestic industry, increase in sales volumes less than increase in production, decline in market share of the domestic industry, decline in sales values in spite of increase in sales volumes, significant decline in the prices, decline in profits from a situation of profits to significant financial losses, deterioration in cash flow & return on investment from a situation of positive to negative, persistent adverse effect on the domestic prices, decline in employment collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury.
45. Even though production, capacity utilization, productivity, wages showed positive trend, decline in market share of the domestic industry and significant financial losses suffered by the domestic industry in its operations of the subject goods establish existence of material injury. It is thus provisionally concluded that the domestic industry has suffered significant material injury.

H. Causal link

46. Authority examined whether other parameters could have contributed to injury to the domestic industry. It was found that:

- a) Imports from Third Countries: - Imports of Cellophane Transparent Film from other countries are either negligible (de minimus) or the export price is significantly higher. Imports from other countries do not appear to have caused injury to the domestic industry.
- b) Contraction in Demand: - Demand for the subject goods have increased. Possible contraction in demand does not appear to have caused injury to the domestic industry. Even though it has been argued that the product under consideration is a dying product and is competing with alternate products, the Authority notes that such alternate products existed for a fairly long period (about a decade) and there has been no such material change in the market situation relating to this product vis-à-vis such alternate products. Further, since the demand has shown positive trend, the fact whether or not the product is dying product is neither factually correct nor relevant with reference to the Indian market. In fact, reliance in this regard has been placed on some very old report relating to the US market which may not be applicable to the Indian market.
- c) Pattern of consumption: - No significant change in the pattern of consumption has been noticed. As regards possible competition from alternate products, as noted in the previous paragraph, demand for the product under consideration has in fact shown an increase and it does not appear that the pattern of consumption has caused injury to the domestic industry.
- d) Conditions of competition: - No evidence of conditions of competition or trade restrictive practices having caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of the Authority.
- e) Developments in technology:- There is no significant change in technology over the injury period which could have caused injury to the domestic industry.
- e) Export performance of the domestic industry:- Export performance of the applicant has not deteriorated. In fact, export volumes of the applicant shows an increase. Applicant however claimed that these exports are avoidable exports and were made due to inability of the domestic industry to sell the material in the domestic market as a result of dumped imports. Further, while the applicant claimed that the price injury and profit injury caused to the domestic industry on account of exports is clearly an injury

suffered by the domestic industry on account of dumped imports and is not required to be segregated and removed while assessing injury for product concerned, the Designated Authority has considered information relevant only to domestic operations while assessing the present injury to the domestic industry.

- f) **Productivity:** - Productivity of the domestic industry has increased as a result of increase in production. Possible deterioration in productivity is therefore not a possible reason for injury to the domestic industry.

Factors establishing causal link

47. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from subject country. This is established by the following:-

- a) Import prices and consequently the landed price of imports from the subject country declined steeply causing significant price undercutting. As a direct consequence, the domestic industry was forced to reduce the prices.
- b) Reduction in the selling prices by the domestic industry adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- c) In spite of reduction in prices by the domestic industry, the imports were cheaper. Resultantly, the volume of dumped imports increased in spite of reduction in prices by the domestic industry. This has directly resulted in continuous increase in import volumes.
- d) Significant positive price undercutting resulted in increase in market share of imports from the subject country. As a direct consequence, while the market share of dumped imports in demand in India increased, that of domestic industry declined.
- e) Existence of significant price undercutting and consequent decline in market share of the domestic industry resulted in a situation where the domestic industry was not able to increase its sales volumes in spite of increase in production and capacity utilization.
- f) Decline in selling prices resulted in a situation where even though the sales volumes increased, sales values declined.
- g) In spite of increase in market demand and reduction in selling prices by the domestic industry, market share of the domestic industry declined due

to significant reduction in landed price of imports and consequent increase in import volumes. This adversely affected the domestic industry.

It is thus concluded that the domestic industry has suffered material injury due to dumped imports from subject country.

I. Other issues

48. The sole responding importer argued that India Ranks poorly in the latest 2005 Economic freedom Index of Heritage Foundation and therefore anti dumping action should be used sparingly. It has also been claimed that Cellophane Film is a small part of the total turnover of the applicant and hence deserves no merit for consideration of levy of anti dumping duty, more so keeping in mind India's poor standing in International Trade Community.

The Authority considers that anti dumping investigations are product specific and also the share of the product in applicant's total business is irrelevant to decide whether the product is being dumped and is causing injury to the domestic industry.

J. Indian industry's interest & other issues

49. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

K. Conclusions

50. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:
- a) The subject goods have been exported to India from the subject country below its normal value;
 - b) The domestic industry has suffered material injury;
 - c) The injury has been caused by the dumped imports from subject country.

L. Recommendations

51. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having provisionally established positive dumping margin against the subject country, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of provisional duty is required to offset dumping and injury pending completion of the investigation.
52. Therefore, Authority considers it necessary and recommends provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.
53. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the amount indicated in Col 9 of the table below is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject country.

Duty Table

| Sl. No | Sub-Heading Or Tariff Item | Description Of Goods | Of Specificati on | Country of Origin | Country of export | Producer | Exporter | Amount | Unit of Meas urement | Curr ency |
|--------|----------------------------|---|-------------------|-------------------|-------------------|----------|----------|--------|----------------------|-----------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) | (9) | (10) | (11) |
| 1. | 3920 | Cellophane Transparent Film (also known as Transparent Paper) | All Grades | China PR | Any | Any | Any | 1.90 | Kgs. | US \$ |
| 2. | 3920 | - do - | -do- | Any | China PR | Any | Any | 1.90 | Kgs. | US \$ |

M. Further Procedures

54. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-
- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final finding;
 - (b) Exporters, importers, applicants and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
 - (c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
 - (d) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority